उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

शोधकर्ता–

नाम–सत्याभारती सूर्यार
एम.एड. (प्रशिक्षार्थी),
प्रगति महाविद्यालय,
चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.),
पता– रानी बगीचा जशपुर

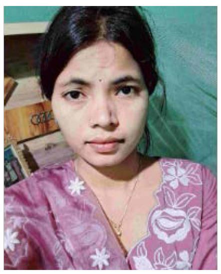

शोध निर्देशक–

नाम– श्री भुनेश्वर यादव
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
प्रगति महाविद्यालय,
चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.),

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का आधार स्तंभ है। यह न केवल ज्ञान का अर्जन है, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया भी है। शिक्षा मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाती है, उसे नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं व्यावहारिक दृष्टि से परिपक्व बनाती है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं है, बल्कि उसका उद्देश्य व्यक्ति के भीतर छिपी क्षमताओं को विकसित करना, उसमें मानवीय मूल्यों का समावेश करना और उसे एक जिम्मेदार नागरिक बनाना
शब्द 'शिक्षा' की व्युत्पत्ति संस्कृत धातु 'शिक्ष' से हुई है, जिसका अर्थ है – 'सिखाना' या 'ज्ञान देना'। शिक्षा केवल औपचारिक संस्थाओं तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह एक सतत प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है। यह प्रक्रिया परिवार, समाज, विद्यालय, अनुभव, परंपराओं तथा संस्कृति के माध्यम से निरंतर चलती रहती है। शिक्षा का वास्तविक स्वरूप तभी स्पष्ट होता है जब वह व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक पक्षों को संतुलित रूप से विकसित करे।

2. निर्देशन का अर्थ

मनुष्य एक सामाजिक, बृद्धिमान और विवेकशील प्राणी है। इसी के आधार पर वह संसार के अन्य प्राणियों से बिल्कुल भिन्न है। वह बुद्धि के बल पर ही समाज के पर्यावरण और अन्य प्राणियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। इसे सामना करना पड़ता है जिसके लिए उसे अपने से बड़ो का सहयोग लेना पड़ता है। इस सहयोग के आधार पर वह समस्याओं के सम्बन्ध में उचित निष्कर्ष निकालने में अपने उदे्श्यों को प्राप्त करने में उसे आसानी होती है। निर्देशन के आधार पर ही व्यक्ति अपनी योग्यताओं, क्षमताओं और कौशलों के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है और अपने में निहित क्षमताओं का उचित प्रयोग करके अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। **जैसे** – जब भगवान राम को लंका में सीता की खोज करायी थी तो हनुमान को अपनी भक्ति का आभास नहीं था जब उन्हे उनके भक्ति और क्षमताओं के बारे में बताया गया तो वे समुद्र को लाँध कर ही पार कर गए। इस प्रकार हम यह देखते हैं कि निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करना नहीं है बल्कि इसके आधार पर व्यक्ति की क्षमताओं का उसे बोध कराकर उसे इस योग्य बनाना होता है। जिससे वह अपनी समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम हो जाए। निर्देशन की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है।

3. शिक्षा में निर्देशन

शिक्षा के निर्देशन का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनकी शैक्षिक, व्यावसायिक तथा वैयक्तिक-सामाजिक ज़रूरतों के अनुरूप मार्गदर्शन देना है ताकि वे सूचित निर्णय लेकर अपनी पूर्ण क्षमता विकसित कर सकें। यह प्रक्रिया न केवल शैक्षणिक-उपलब्धि और करियर-तैयारी में सहायक होती है, बल्कि मानसिक-सामाजिक कल्याण और आत्म-नियमन कौशल भी सुदृढ़ करती है।

शैक्षिक निर्देशन – सही विषय-पाठ्यक्रम चयन, अध्ययन-रणनीति, परीक्षा-तैयारी और सीखने की बाधाओं का समाधान।

व्यावसायिक निर्देशन – रुचि-योग्यता आकलन, उद्योग-सूचना, इंटर्नशिप/प्रशिक्षण के अवसर और करियर-पथ निर्धारण।

व्यक्तिगत-सामाजिक निर्देशन – आत्म-पहचान, भावनात्मक-समायोजन, सहानुभूति, संघर्ष-प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य सहायता।

4. अध्ययन की आवश्यकता

नैतिक शिक्षा और शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्सम्बन्ध पर अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि

(1) **मूल्य-आधारित अधिगम छात्रों के व्यवहार और कक्षा**-अनुशासन को प्रभावित करता है, पर इसकी प्रत्यक्ष भूमिका अकादमिक परिणामों में कितनी है, यह स्पष्ट संख्यात्मक साक्ष्य अभी सीमित है।

(2) **लिंग, क्षेत्र (ग्रामीण-शहरी) और सामाजिक**-आर्थिक स्तर के आधार पर नैतिक कार्यक्रमों के प्रभाव में अंतर दिखाई देता हैकृइन भिन्नताओं को मापना नीति-निर्माताओं को लक्षित हस्तक्षेप तय करने में मदद करेगा।

(3) **भारत में नई शिक्षा नीति 2020 ने "मूल्य**-सम्पन्न शिक्षा" को मुख्य धारा में रखा है, इसलिए विद्यालय-स्तर पर इसके प्रभाव-आकलन हेतु ताज़ा डेटा की ज़रूरत है।

(4) **दुनिया**-भर के शोध दिखाते हैं कि उच्च नैतिक मानदंड वाले वातावरण में विद्यार्थियों की आत्म-नियंत्रण व सीखने की अभिप्रेरणा बढ़ती है, पर भारतीय संदर्भ में दीर्घकालिक अध्ययन दुर्लभ हैं।

5. संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

पूर्व में किए गए शोध कार्य–

5.1 भारत में किये गए शोध कार्य

- **सिंह, रितु (2014**) ने जन्मक्रम पर आधारित निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं, विषयपर शोधकार्य कर निष्कर्ष निकाला कि जन्मक्रम का निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

- **देशमुख, के (2014) ने** शारीरिक व विकलांग बालकों की समाज में निर्देशन आवश्यकताओं की पीएच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया। शारीरिक अपाय तथा सामान्य विद्यार्थियों के निर्देशन आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नही ंपाया गया।
  उच्च स्वधारणा वाले विद्यार्थियों में दूसरों पर निर्भर रहने की भावना कम पायी गयी।

- **पंडित, आई. ए. (2010) ने** युवकों की निर्देशन आवश्यकता और समाजोपयोग शिक्षण पर शोधकार्य किया। किशोरों का गूढ़तम सामाजिक, संवेगात्मक व विवेकशैली समायोजन व निर्देशन सभी क्षेत्रों में मिला। समाजोपयोग व निर्देशन के सभी क्षेत्रों में अवकाश प्राप्त विद्यालय स्तर सर्वाधिक अच्छा रहा।

5.2 विदेश में किये गए शोध कार्य

- **एल. पेरी एवं डी. निकोल्स (2014)** "हाई स्कूल विद्यार्थियों की मूल्यों एवं मातापिता की आकांक्षाओं के अनुरूप शिक्षा चयन" विषय पर अध्ययन किया। इसमें शारीरिक एवं सामाजिक शिक्षा ग्रहण करने को पारिवारिक वातावरण से जोड़कर देखा गया।

- **खेमलानी भूषि जुगनू (2013–14)** "विज्ञान विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव" विषय पर अध्ययन किया गया। निष्कर्षतः अध्ययन आदतों के निर्देशन की उपेक्षा शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

- **कैलिफोर्निया शिक्षा विभाग (2013)** "स्कूल काउंसलिंग इफेक्टिवनेस" विषय पर शोध किया गया। विद्यार्थियों के लिए नियमित परामर्श कार्यक्रम की उपयोगिता बताई गई जिससे वे मानसिक समस्याओं से उबर सकें।

6. अध्ययन का उद्देश्य

1.उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों उनके पारिवारिक वातावरण का मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन करना।

2.उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों उनके पारिवारिक वातावरण का मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन करना।

3.उच्चतर माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों उनके पारिवारिक वातावरण का मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन करना।

7. अध्ययन की परिकल्पनाएं

इस शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

8. अध्ययन की क्षेत्र व परिसीमन –

वर्तमान अध्ययन का विषय है – **"उत्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव"।** यह विषय व्यापक है, किन्तु सीमित संसाधनों, समय और साधनों को दृष्टिगत रखते हुए इस अध्ययन की परिसीमा निम्नलिखित रूप में निर्धारित की गई है।

समय एवं साधनों की सीमितता के कारण शोध अध्ययन की परिसीमाएं निर्धारित की गई है, जो निम्नानुसार है–

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।

2. प्रस्तुत अध्ययन में 1 शासकीय एवं 1 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को सम्मिलित किया जायेगा।

3. प्रस्तुत अध्ययन में 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में सम्मिलित किया जायेगा।

क्रमांक	विद्यार्थी	शास. शाला	अशास. शाला	योग
1	छात्र (बालक)	25	25	50
2	छात्रा (बालिका)	25	25	50
कुल योग		**50**	**50**	**100**

9. शोध विधि

इस शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जाएगा ताकि उत्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों से उनके पारिवारिक वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सके। सर्वेक्षण के दौरान हम दोनों वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक प्रश्नों का उपयोग करेंगे। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे, जबकि व्यक्तिपरक प्रश्नों में खुला सवाल होगा, जिसे विद्यार्थी अपनी सोच और अनुभव के आधार पर उत्तर देंगे। शोध किसी भी शैक्षणिक, सामाजिक या वैज्ञानिक क्षेत्र में तथ्यात्मक एवं प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध कराने का एक सशक्त माध्यम है। शोध की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शोध समस्या के लिए उपयुक्त शोध विधि का चयन किया गया है या नहीं। शोध विधि का अर्थ है – उस विशेष प्रक्रिया या उपाय का चयन, जिसके माध्यम से शोध कार्य संपन्न किया जाता है। शोध विधि का चयन करते समय शोधकर्ता को अत्यंत सावधानी बरतनी होती है क्योंकि शोध विधि का सीधा प्रभाव शोध के निष्कर्षों की विश्वसनीयता एवं सत्यता पर पड़ता है।

10. जनसंख्या

शैक्षिक शोध में "जनसंख्या" उस समस्त समूह को कहा जाता है, जिससे संबंधित कोई विशेष जानकारी या निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना है। अतः शोध की जनसंख्या उसी वर्ग से संबंधित विद्यार्थियों को बनाया गया है जो अध्ययन की दृष्टि से उपयुक्त एवं प्रतिनिधिक हैं।

इस अध्ययन की जनसंख्या का स्वरूप इस प्रकार है– इस शोध में रायपुर जिले के चयनित शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। कुल 100 विद्यार्थी जनसंख्या में रखे गए, जिनमें 50 बालक (लड़के) तथा 50 बालिकाएँ (लड़कियाँ) शामिल हैं। सभी विद्यार्थी कक्षा 11वीं एवं 12वीं के हैं तथा इनकी आयु 15 से 18 वर्ष के मध्य है। ये विद्यार्थी शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों से चयनित किए गए हैं, ताकि पारिवारिक वातावरण की विविधता को समाविष्ट किया जा सके।विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों से संबंध रखते हैं– जैसे निम्न वर्ग, मध्य वर्ग एवं उच्च वर्ग। जनसंख्या का चयन क्यों महत्वपूर्ण है? इस प्रकार संतुलित जनसंख्या का चयन इसलिए किया गया ताकि – लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके (बालक बनाम बालिका)।

11. न्यादर्श विधि

शोध प्रक्रिया में न्यादर्श का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है। जब किसी संपूर्ण जनसंख्या से प्रत्यक्ष रूप से जानकारी प्राप्त करना संभव न हो, तब उस जनसंख्या के एक सीमित, लेकिन प्रतिनिधिक भाग का चयन किया जाता है, जिसे न्यादर्श कहा जाता है। यह न्यादर्श पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करता है और इसी के आधार पर निष्कर्षों की सामान्यीकरण की प्रक्रिया की जाती है।

इस अध्ययन में न्यादर्श का स्वरूप निम्न प्रकार से निर्धारित किया गया है–

इस अध्ययन के लिए कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इनमें 50 बालक (लड़के) एवं 50 बालिकाएँ (लड़कियाँ) सम्मिलित की गईं। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक नमूना चयन विधि द्वारा किया गया, जिससे प्रत्येक छात्र को समान अवसर मिला। ये विद्यार्थी रायपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के चयनित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से चुने गए हैं। विद्यार्थियों को अलग–अलग पारिवारिक संरचना (संयुक्त परिवार, एकल परिवार), माता–पिता के शिक्षित या अशिक्षित होने, तथा आर्थिक स्थिति के आधार पर भी विविधता के साथ चुना गया है।

न्यादर्श चयन की प्रक्रिया में ध्यान रखे गए बिंदु–

1. लैंगिक संतुलन – लड़के और लड़कियों की संख्या समान रखी गई, ताकि दोनों वर्गों की

मानसिक स्थिति की तुलना की जा सके।

2. क्षेत्रीय विविधता – शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों को समान अवसर दिया गया।
सामाजिक पृष्ठभूमि – विद्यार्थियों को निम्न, मध्य व उच्च वर्ग से सम्मिलित किया गया, जिससे पारिवारिक वातावरण में विविधता आए।

क्रमांक	चयनित विद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	कुल
1.	शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला रायपुरा, जिला–रायपुरा, रायपुर (छ.ग.)	25	25	50
2.	शिवोम विद्यापीठ, महादेव घाट रायपुर, जिला–दुर्ग, (छ.ग.)	25	25	50
	कुल योग	50	50	100

12. उपकरण

1.पारिवारिक वातावरण मापक प्रश्नावली – शालू सैनी एवं परमिंदर कौर

2.मानसिक स्वास्थ्य मापक प्रश्नावली – रुची सिंह एवं रागिनी मिश्रा

13. सांख्यिकीय विश्लेषण

मध्यमान $\bar{X} = \frac{\sum X}{N}$

प्रमाप विचलन $SD = \sqrt{\frac{\sum(X-\bar{X})^2}{N}}$

क्रांतिक अनुपात $C.R. = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$

टी–टेस्ट $t = \frac{X_1 - X_2}{\sqrt{\frac{S_1^2}{N_1} + \frac{S_2^2}{N_2}}}$

14. परिकल्पना का प्रमापीकरण

प्रदत्त का संकलन होने के बाद उसका विश्लेषण हेतु प्रदत्त को व्यवस्थित क्रम में रखना होता है।

सारणी 1

शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर पारिपारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर (t-test परिणाम)

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मान	सार्थकता
शासकीय	25	180	15.2	2.34	असमान्य
अशासकीय	25	190	14.7		

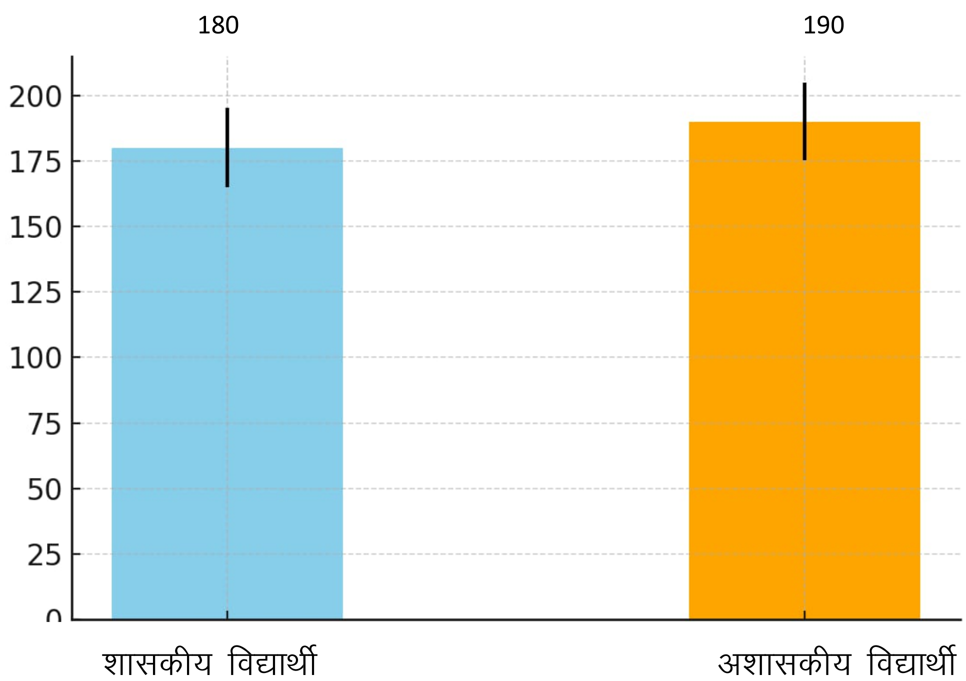

ग्राफ 1 शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर पारिपारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर

व्याख्या– इस सारणी से पता चलता है कि अशासकीय विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य स्कोर शासकीय विद्यार्थियों की तुलना में असमान्य है, अतः अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी 2

अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर पारिपारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर (t-test परिणाम)

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मान	सार्थकता
अशासकीय	25	185	16-0	1.12	असमान्य
शासकीय	25	187	15-5		

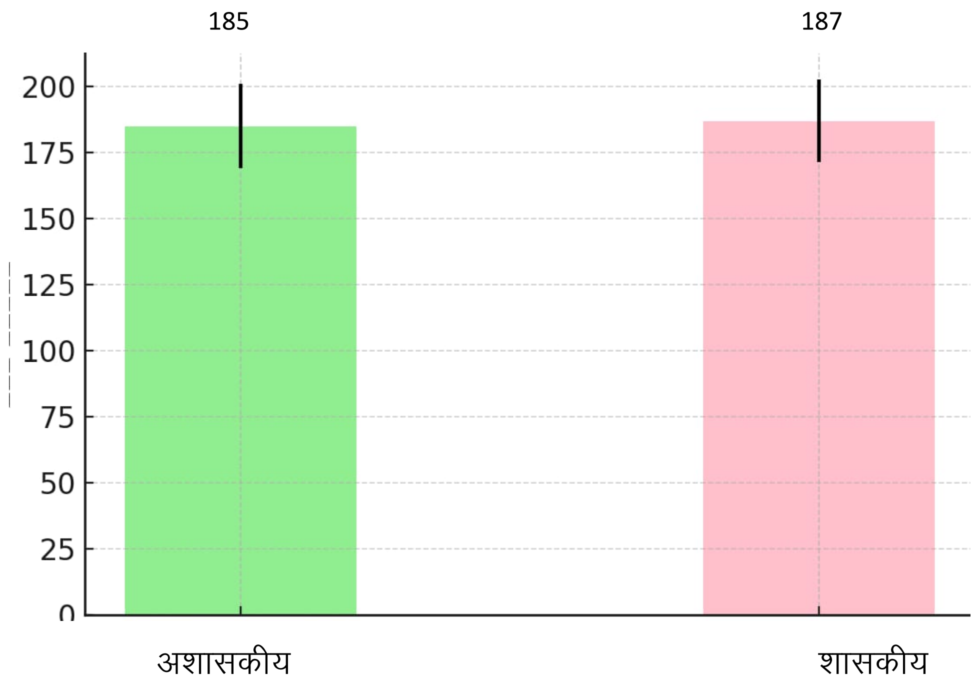

ग्राफ 2 अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर पारिपारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर

व्याख्या– इस सारणी से पता चलता है कि अशासकीय विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य स्कोर शासकीय विद्यार्थियों की तुलना में असमान्य है, अतः अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी 3

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर पारिपारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर

क्रमांक	चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
1	शासकीय स्कूल	50	40.7	5.81	2.67	असमान्य
2	अशासकीय स्कूल	50	43.7	5.4		

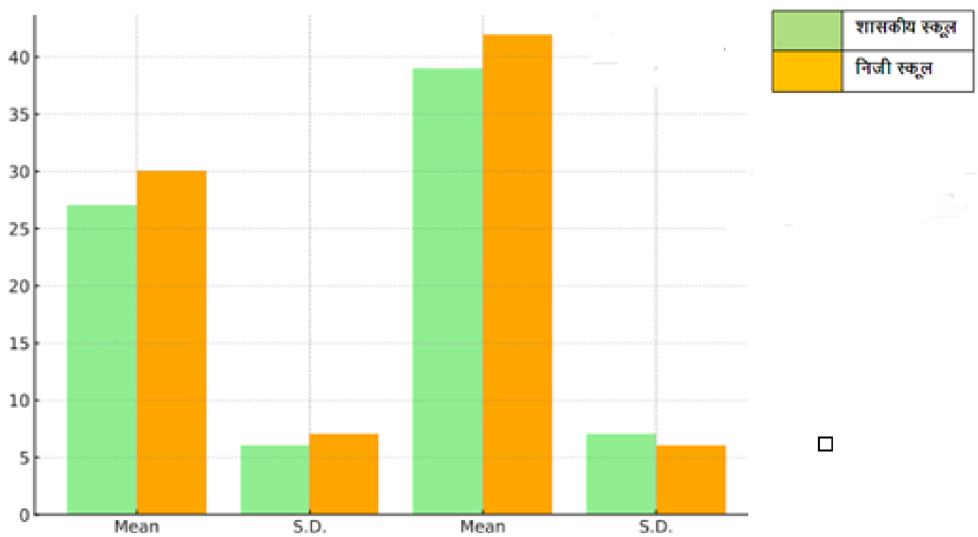

ग्राफ – 3 अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर पारिपारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर

व्याख्या – इस सारणी से पता चलता है कि अशासकीय विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य स्कोर शासकीय विद्यार्थियों की तुलना में असमान्य है, अतः अंतर नहीं पाया जायेगा।

15. निष्कर्ष एवं परिणाम

शोध अध्ययन "उत्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव" का उद्देश्य यह जानना था कि पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को किस प्रकार प्रभावित करता है। इस शोध के अंतर्गत त्पचनत जिले के 100 विद्यार्थियों (50 लड़के और 50 लड़कियाँ) का चयन किया गया और उनके पारिवारिक वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया।

16. भावी शोध हेतू सुझाव

1. **माता–पिता को जागरूक बनाना आवश्यक–** माता–पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को समझें।

2. **सकारात्मक पारिवारिक वातावरण का निर्माण–** विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए यह आवश्यक है कि परिवार में स्नेह, सहयोग और समझदारी का वातावरण हो।

3. **विद्यालय स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा–** विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

4. **मनोवैज्ञानिक सहायता केंद्र–** प्रत्येक विद्यालय में एक प्रशिक्षित काउंसलर या मनोवैज्ञानिक नियुक्त किया जाना चाहिए जो विद्यार्थियों की समस्याओं को समझे और उन्हें उचित मार्गदर्शन है।

5. **अभिभावक–शिक्षक सहयोग–** विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने में अभिभावक और शिक्षक दोनों की संयुक्त भूमिका होती है।

संदर्भ ग्रंथसूची

- शर्मा, रामनाथ एवं शर्मा, राजेन्द्र कुमार (2006) – शैक्षिक मनोविज्ञान, एटलांटिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली।पृष्ठ संख्या: 152–187
- चौहान, सुरेश (2012) – बाल मनोविज्ञान, विनायक पब्लिकेशन, आगरा।पृष्ठ संख्या: 98–132

- वैग, एल. एस. (2007) – शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंडल, आगरा।पृष्ठ संख्या: 65–100
- बौमरिंड, डायना (1991) – पालन–पोषण शैली और किशोर विकास, जर्नल ऑफ़ अर्ली एडलोसेंस, खंड 11, अंक 1।पृष्ठ संख्या: 56–95
- स्टीनबर्ग, लॉरेंस (2001) – माता–पिता एवं किशोरों के संबंध, जर्नल ऑफ रिसर्च ऑन एडलोसेंस, खंड 11।पृष्ठ संख्यारू 1–19
- कॉगर, आर. डी. एवं कॉगर, के. जे. (2002) – मिडवेस्टर्न परिवारों में लचीलापन, जर्नल ऑफ मैरिज एंड फैमिली, खंड 54, अंक 3। पृष्ठ संख्यारू 500–510
- अमाटो, पी. आर. (2000) – तलाक का बच्चों पर प्रभाव, जर्नल ऑफ मैरिज एंड फैमिली, खंड 62, अंक 4।पृष्ठ संख्या: 1269–1287
- योशिकावा, हीरोकाजू (1994) – परिवारिक समर्थन और बाल विकास, अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, खंड 49।पृष्ठ संख्या: 274–283
- शर्मा, जयप्रकाश (2011) – बाल विकास एवं शिक्षा, अमन पब्लिकेशन, जयपुर।पृष्ठ संख्यारू 121–144
- राव, शंकर सी. एन. (2009) – सामाजिक मनोविज्ञान, एस. चन्द एंड कम्पनी, नई दिल्ली।पृष्ठ संख्या: 201–215